

ठर्म 9, 81, 1. प्रयती पतिम् 10, 83, 12. प्र ह्येणो यिना यति निन्धवः 92, 5. अस्तं प्रेतं VS. 3, 47. प्र यत्नं एतु निर्दिष्टः पश्चिः AV. 2, 10, 4. भद्रादयि श्रेयः प्रेक्षि 7, 8, 1. 114, 2. प्रतीची वा प्रतीचीनः शाले प्रेमि 9, 3, 22. 10, 4, 6. 11, 10, 18. 12, 2, 34. उतिष्ठ प्रेक्षि प्र देव 18, 3, 8. यः प्रियार्थं प्रथमो लोकमेतम् 13. ÇAT. BR. 4, 1, 5, 13. 9, 5, 1, 19. त्तिप्रे ऽस्माह्लोकाद्यत्रमानः प्रैष्यति 4, 5, 9, 11. 7, 4, 2, 18. 10, 3, 2, 8. स इतः (aus dieser Welt) प्रयत्नेव पुनर्जायते AIT. UP. 4, 4. वेत्य यदितो अथि प्रजाः प्रयत्ति KHAND. UP. 5, 3, 2. इतः प्रेत्य 3, 14, 1. धीराः प्रेत्यास्माह्लोकादमृता भवन्ति KENOP. 2. अन्नं प्रयत्त्यभिर्संविशात् TAITT. UP. 3, 2, 1. प्रैक्षि माम् komme zu mir MBH. 1, 3690. अंप्रैत nicht weggegangen ÇAT. BR. 2, 3, 1, 9. zu Etwas gelangen, theilhaftig werden: स तेन कर्मणा प्रैति प्रजापतिसलोकताम् MBH. 3, 13385. — 3) aus dieser Welt fortgehen, abscheiden, sterben: परायुषः प्रैताः vor der Zeit zu sterben AIT. BR. 8, 7. ÇAT. BR. 10, 2, 6, 7. तस्ये ऽर्वागिंशेषु वर्येषु प्रयत्ति 8. 14, 4, 2, 25 (= BRH. Å. UP. 1, 3, 17). वेत्य यथासौ लोक एवं वृद्धिभिः पुनः पुनः प्रयदिन्नं संपूर्णते 9, 2, 2 (= BRH. Å. UP. 6, 2, 2). KHAND. UP. 6, 8, 6. AIT. UP. 4, 4. NIR. 3, 2. M. 2, 111 (= MBH. 1, 755). प्रायम् s. u. 2. श्मश्रु 4, b. प्रेत्य nach dem Tode, jenseits (Gegens. इह) AK. 3, 5, 8. TAITT. UP. 2, 6. M. 2, 9, 26. 146. 3, 20. u. s. w. BHAG. 17, 28. R. 1, 1, 95. von einem Baume BRH. Å. UP. 3, 9, 28. प्रैत verstorben AK. 2, 8, 2, 85. TRIK. 3, 3, 168. H. 373. M. 2, 247. 4, 217. 5, 57. 65. 68. 82. u. s. w. MBH. 18, 46. PANKAT. I, 380. RAGH. 8, 85. YET. 5, 10. प्रेतवत् wie bei einem Verstorbenen M. 11, 183. — 4) ved. inf. प्रेषे (भगाय) P. 3, 4, 9, Sch. — intens. ausfahren: प्र बोधयंती सुवितायं देव्युषा इयते सुयुजा रथेन RV. 4, 14, 3. — Vgl. — प्र.

— अनुप्र 1) Jmd nachgehen, folgen: तं वः शर्धं रथानां त्रिषं गणां माहूतं नव्यंसीनाम् । अनु प्र यति वृष्टयः RV. 5, 53, 10. पूषन्ननु प्र गा इक्षि 6, 54, 6. AV. 19, 44, 10. ÇAT. BR. 1, 4, 4, 4. 4, 1, 5, 9. TS. 6, 4, 2, 1. — 2) aufsuchen: अरुतिमनुप्रेमः AV. 5, 7, 3. अरुतिं ह्यीमानि सर्वाणां भूतान्यनुप्रयत्ति AIT. BR. 2, 41. — 3) im Tode folgen: त्तिप्रे कैषामपरो ऽनुप्रेति ÇAT. BR. 13, 8, 1, 7. 12. 3, 4, 4.

— अयप्र weggehen, sich entfernen: अयास्मात्प्रयात् RV. 10, 117, 4. तस्माद्देवा अयप्रयति ÇAT. BR. 2, 3, 1, 7. 12, 4, 4, 6, 7.

— अमिप्र 1) herbeikommen, zugehen auf (acc.): अमि प्रेक्षि दक्षिणातो भवेो मे RV. 10, 83, 7. 84, 1. 103, 12. AV. 3, 1, 2. 4, 8, 2. 18, 3, 73. यज्ञो देवलोकमभिप्रैति ÇAT. BR. 1, 9, 2, 1. 3, 3, 15. 4, 3, 4, 6. 9, 2, 2, 8. 13, 6, 2, 20. NIR. 3, 12. स प्राञ्जलिरभिप्रेत्य प्रणातः पितुरत्तिके R. 2, 3, 31. तमागतमभिप्रेत्य MBH. 1, 5581. कर्मणा (Object) यमभिप्रेति स संप्रदानम् (Dativ) P. 1, 4, 32. zu Theil werden: फलं कार्त्तारमभिप्रेति 3, 72, Sch. — 2) mit dem Geiste, den Gedanken wohin gehen, denken an: कथं रामो मन्वाबाहुः स तथा वित्त-शक्रियः । भक्तं जनमभिप्रेत्य प्रवाचं तयसो गतः ॥ R. 2, 47, 5. तं तमर्थमभिप्रेत्य 49, 16. अमिप्रेत्य indem man darunter versteht NIR. 1, 7. 2, 3, 20. — partic. अमिप्रेत 1) angenommen, anerkannt, gebilligt NIR. 1, 6. SUCR. 1, 23, 6. पूर्वैरयमभिप्रेतो गतो मार्गो ऽनुगम्यते R. 2, 21, 35. — 2) beabsichtigt, gemeint: किमभिप्रेतमनया was will sie? BHARTR. 1, 94. साधयार्थमभिप्रेतम् R. 5, 8, 18. NIR. 3, 11. 14. 16. अमिप्रेतं साधयामि PANKAT. 191, 11. निवेद्यामिप्रेतम् 19, 6. यथाभिप्रेतमनुष्ठीयताम् 57, 24. HIT. 54, 17. 129, 13. अमिप्रेतं (adv.) गतः PANKAT. 265, 21. — 3) an Herzen liegend, genehm, lieb: स्वो च पत्नीमभिप्रेताम् R. 4, 28, 3. ÇAK. 87, 16. 110, 7. अस्त्यस्माकमभिप्रेतं भवत्तं क-

चिदर्थमभिप्रेष्टुम् MBH. 3, 13338. किमभिप्रेतं तव KATHIS. 26, 239. 4, 33. DAÇAK. in BENF. Cfr. 182, 1.

— उपप्र 1) herzugehen, hinzugehen, losgehen auf RV. 1, 40, 1. 139, 1. इन्द्राग्नी अयसस्पर्षुय प्र यति धीतयः 3, 12, 7. देवो उप प्रैत 10, 72, 8. 9. AV. 4, 31, 1. ब्रह्मणो वशामुपप्रयति याचितुम् 12, 4, 31. उपप्रयुर्वृत्रं हनिष्यतः ÇAT. BR. 2, 5, 2, 2. 12, 9, 2, 7. स्वर्गं वा एतेन लोकमुपप्रयति AIT. BR. 1, 7. — 2) unternehmen, beginnen, sich anschicken zu; mit acc. und dat.: उपप्रयतो अघ्नरम् RV. 1, 74, 1. उपप्रयन्दस्युक्तयाय 103, 4. 4, 39, 5. वित्तयं वापिप्रेष्यतः ÇAT. BR. 2, 2, 2, 2. 3, 1, 2, 11. 4, 3, 1, 2. मिथुनम् 9, 4, 1, 4. तस्मै तृणां निदधावेतद्वहेति तदुपप्रयाय सर्वत्रयेन तत्र शशाका KENOP. 19.

— परिप्र ringsum durchlaufen: परिप्रयते व्ययं सुयंसदं सोमम् RV. 9, 68, 8.

— विप्र auseinandergehen, sich zerstreuen: एते पृष्ठानि रोदसोर्विप्रयत्तो व्यानप्रः RV. 9, 22, 5. ÇAT. BR. 11, 4, 1, 9. यद्यु ते विप्रेताः स्युः 3, 2, 2, 22. fortgehen: विप्रेक्षि (!) तिष्ठ वा MBH. 1, 6392.

— संप्र zusammenströmen: समु प्र यति धीतयः सर्गासो ऽवतां इव RV. 10, 25, 4. संप्रयतोः (नदीः) AV. 3, 13, 1.

— प्रति 1) entgegengehen, — kommen; hinzugehen, herkommen; heimkehren; mit acc. RV. 1, 11, 6. 92, 1. 119, 2. युवाकुमारः प्रत्येत्पाकुवम् 153, 6. रथ्येव चक्रा प्रति यति मधः 180, 4. 5, 44, 12. एमैनं प्रत्येतंन सोमेभिः 6, 42, 2. 8, 23, 22. 31, 6. 9, 69, 4. 10, 1, 4. बृहस्पते प्रति ते देवतामिदि 98, 1. प्रतीत्या शत्रून् 116, 5. AV. 3, 1, 1, 2. 19, 49, 9. ÇAT. BR. 4, 3, 4, 30. 31. तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्यावः 14, 9, 1, 6 (= BRH. Å. UP. 6, 2, 4). सरस्ततो द्वैतवनं प्रतीयुः MBH. 3, 12359. कृष्णपार्थो जिघांसतः प्रतीयुः 1, 8270. 3, 1922. प्रतीयाय (er kehrte heim) गुरोः सकाशम् RAGH. 5, 35. प्रतीय (!) gerund. und प्रतीयुषा BHATT. 3, 19. — 2) Jmd angehen, sich an Jmd wenden: यज्ञो देवानां प्रत्येति सुमम् RV. 1, 107, 1. प्रति व एन्म नमसाह्मैमि 171, 1. AV. 11, 2, 18. ÇAT. BR. 2, 2, 4, 16. 11, 4, 2, 7. 5, 5, 3, 7. — 3) zugehen, zutheilwerden; zu Etwas gelangen, erreichen: तुभ्यं प्रतिपत्तु शता गवाम् AIT. BR. 7, 17. पारमार्थिकजीवि ऽयं ब्रह्मैव्यं पारमार्थिकम् । प्रत्येति BALAB. 43. — 4) anerkennen, sich von der Richtigkeit einer Sache überzeugen, Etwas für das ansehen was es ist, Gewissheit über Etwas erlangen, Glauben schenken: उच्चावचा जनपदधर्मा ग्रामधर्माश्च तान्विवाहे प्रतीयात् ÅCV. GRHJ. 1, 7. ÇR. 9, 3. NIR. 1, 15. वचनमिदं मम — प्रतीक्षि R. 5, 31, 61. तन्नं प्रतीक्षि 81, 42. तेन तद्वृत्तान्तं प्रत्येतुमागता ऽस्मि PRAB. 23, 4. भवतु प्रतीमस्तावत् wir wollen uns mal davon überzeugen 30, 7. सर्वो ज्ञात्मास्ति त्वं प्रत्येति न नाह्मस्मीति, सर्वो लोको नाह्मस्मीति प्रतीयात् ÇAKAR. in WIND. SANCARA 93. KATHIS. 23, 23. को मां प्रत्येत्वाज्ञानम् wer könnte Gewissheit darüber erlangen, dass ich es nicht wüsste, 24, 61. न चेत्प्रतीयं wenn ihr nicht glaubt DAÇAK. 161, 6. प्रतीक्षि K Å. R. 10 (aus der Kic.) zu P. 7, 2, 10. — pass. erkannt werden, sich aus Etwas ergeben, ersehen werden, sich als das was es ist herausstellen: तद्वृत्तिकृत्य (so ist zu lesen) कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतीयते HIT. III, 96. NIR. 1, 16. उपपदेन प्रतीयमाने (क्रियाफले) P. 1, 3, 77. नित्यशुद्धवद्दयो ऽर्थाः प्रतीयन्ते बृहन्नेतिरार्थानुगमात् ÇAKAR. in WIND. SANCARA 93. SIB. D. 10, 21. कलहसमालाः प्रतीयिरे श्रोत्रसुखैर्निनादैः BHATT. 2, 18. ÇICUP. 1, 69. प्रतीयमाणं worauf man erst durch Combination geführt wird im Gegens. zu वाच्यं was klar ausgesprochen ist SIB. D. 6, 17. — partic. प्रतीति 1) anerkannt, bewährt, bekannt AK. 3, 1, 9, 4,